सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार
प्रेस विज्ञप्ति

संख्या– 28
08/01/2019

झुलसा रोग से आलू फसल का बचाव

पटना, 08 जनवरी 2019 :– कृषि विभाग से प्राप्त सूचनानुसार मौसम में परिवर्तन यथा कोहरा (कुहासा) तापमान में उतार–चढ़ाव एवं उच्च सापेक्ष आर्द्रता की स्थिति के कारण खेत में लगे आलू फसल में झुलसा रोग के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। झुलसा रोग दो तरह का होता है। (क) पिछात झुलसा (ख) अगात झुलसा

आलू में फाइटोपथोरा इन्फेस्टेन्स नामक फफूँद के कारण पिछात झुलसा होता है। वायुमंडल का तापमान 10 डिग्री से 19 डिग्री सेल्सियस रहने पर आलू में यह रोग के लिए उपयुक्त वातावरण माना जाता है। इस रोग से आलू की पत्तियाँ किनारे से सूखती हैं। सूखे भाग को दो अगुंलियों के बीच रखकर रगड़ने से खर–खर की आवाज होती है।

फसल की सुरक्षा के लिए 10–15 दिनों के अन्तराल पर मैंकोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करनी चाहिए। संक्रमित फसल में मैकोजेब एवं मेटालैक्सिल अथवा कार्बेन्डाजिम एवं मैंकोजेब संयुक्त उत्पाद का 2 ग्राम प्रति लीटर या 2 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करनी चाहिए।

आलू में अल्टरनेरिया सोलेनाई नामक फफूंद के कारण अगात झुलसा होता है। प्रायः निचली पत्तियों पर गोलाकार धब्बे बनते है। जिसके भीतर में कसेन्ट्रीक रिंग बना होता है। धब्बा युक्त पत्ती पीली पड़कर सूख जाती है। राज्य में यह रोग देर से लगता है जबकि ठंडे प्रदेशों में इस फफूंद के उपयुक्त वातावरण पहले बनता है।

फसल में इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही जिनेव 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 25 किलों ग्राम प्रति हे0 या मैंकोजेब 75 प्रतिशत घू0चू0 2 किलोग्रम प्रति हेक्टेयर अथवा कॉपर आक्सीक्लोराईड 50 प्रतिशत घु0चू0 3 किलोग्राम प्रति हे0 की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

*****